2800th Nirvan Kalyanak of Bhagwan Parshvanath

In the historical city of Varanasi, 2900 years ago, King Ashvasen and Queen Vamadevi were blessed with a son in the midnight of Paush Krishna 10/11. The boy child was named Parshva Kumar. In due course, his education started and with sharp intelligence, he was praised by his teachers. He also excelled in horsemanship and weaponry. Gifted with three types of Gyan (Knowledge) —Mati (sensory knowledge), Shruti (scriptural knowledge), and Avadhi (clairvoyance) since birth, he realized the transitory nature of worldly comforts. Therefore, he decided to embrace asceticism.

On Pausha Krishna Ekadasi, Parshva Kumar, standing under a Ashoka tree in Varanasi, plucked out five fistfuls of his hair, and initiated himself into monkhood. Immediately upon his initiation, he attained the fourth knowledge—Manahparyaya Gyan (a kind of telepathy).

On the eighty-fourth day of his spiritual journey and completing an eight-day fast, he achieved Omniscience (Keval Gyan) and Omniperception (Keval Darshan) at Varanasi on Chaitra Krishna 4.

After attaining omniscience, Bhagwan Parshvanath visited many places and delivered profound religious discourses. His teachings of non violence, truth and self restraint inspired numerous followers for their spiritual upliftment. He explained the essence of dharma and strongly opposed rituals like animal sacrifice and the ostentation prevalent in religious practices at that time and reviving the true essence of Dharma.

As his liberation (moksha) drew near, Parshvanath, along with thirty-three monks, traveled to Mount Sammet Shikhar. There, he undertook a fast until death. After fasting for one month and having completed 100 years of life, he attained liberation on the eighth day of the bright fortnight of Shravana, under the Vishakha constellation.

Bhagwan Parshvanath's teachings left an indelible mark on Jain tradition. Jain devotees consider their lives fulfilled by remembering and venerating Bhagwan Parshvanath daily.

Jainacharya Shri Jinapiyushsagar Suriswarji M.S. regards Bhagwan Parshvanath as an exceptionally influential Tirthankara. Parshvanath's Nirvan, occurred 250 years before Bhagwan Mahaveer's Nirvan, which took place on Diwali. As we are now in the 2550th year of Mahaveer's Nirvan, it follows that this year marks the 2800th year of Bhagwan Parshvanath's Nirvan.

To honor this significant event, various activities and commemorative events will take place across the country, celebrating the teachings and legacy of Bhagwan Parshvanath, and emphasizing his principles of truth, non-violence, and compassion.

To commemorate this historic occasion, the Department of Posts is proud to issue a commemorative Postage Stamp on 2800th Nirvan Kalyanak of Bhagwan Parshvanath, recognizing his enduring contributions to human welfare and spirituality.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	:	Ms. Himani
Text	:	Referenced from content provided by Proponent

भारतीय डाक
डाक सेवा-जन सेवा
India Post
Dak Sewa-Jan Sewa

डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS



भगवान पार्श्वनाथ का 2800वां निर्वाण कल्याणक
2800th Nirvan Kalyanak of Bhagwan Parshvanath

विवरणिका
BROCHURE

भगवान पार्श्वनाथ का 2800वां निर्वाण कल्याणक

2900 वर्ष पूर्व, ऐतिहासिक नगर वाराणसी में, राजा अश्वसेन और रानी वामादेवी को पौष माह के कृष्ण पक्ष की 10 और 11 तारीख की मध्यरात्रि को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। इस बालक का नाम पार्श्व कुमार रखा गया। उचित समय आने पर पार्श्व कुमार की शिक्षा प्रारंभ हुई। अपनी प्रखर बुद्धि के बल पर यह बालक जल्द ही सभी शिक्षकों का प्रिय शिष्य बन गया। पार्श्व कुमार ने घुड़सवारी और शस्त्र विद्या में भी महारत हासिल की। जन्म से ही तीन प्रकार का ज्ञान अर्थात् मति (इंद्रिय ज्ञान), श्रुत (शास्त्रों से प्राप्त होने वाला ज्ञान) और अवधि (अतीन्द्रिय ज्ञान) होने के कारण, उन्हें जल्द ही सांसारिक सुखों की क्षणभंगुरता का अनुभव हो गया। अतः उन्होंने वैराग्य का मार्ग चुना।

पार्श्व कुमार ने पौष मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को वाराणसी में अशोक वृक्ष के नीचे पांच मुट्ठी केश लोचन कर संन्यास धारण कर लिया। दीक्षा लेने के तुरंत बाद उन्हें चौथा ज्ञान अर्थात् मनःपर्यव ज्ञान (एक प्रकार की टेलीपेथी) प्राप्त हुआ।

अपनी आध्यात्मिक यात्रा के 84वें दिन और आठ दिन का उपवास रखने के पश्चात, उन्हें चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को वाराणसी में सर्वज्ञता (केवल ज्ञान) और सर्वव्यापकता (केवल दर्शन) की प्राप्ति हुई।

सर्वज्ञता प्राप्त करने के बाद, भगवान पार्श्वनाथ ने अनेक स्थानों की यात्रा की और धार्मिक प्रवचन दिए। उनके द्वारा दिए गए अहिंसा, सत्य और आत्मसंयम के उपदेशों ने असंख्य अनुयायियों को आध्यात्मिक उत्थान की ओर प्रेरित किया। उन्होंने लोगों को धर्म का सार समझाया और उस समय के समाज में धार्मिक अनुष्ठानों में प्रचलित पशु–बलि और पाखंड का प्रबल विरोध किया। इस प्रकार उन्होंने धर्म की मूल भावना की पुनः स्थापना की।

मोक्ष का समय नजदीक जानकर भगवान पार्श्वनाथ, तैंतीस (33) अन्य साधुओं के साथ सम्मेद शिखर की चोटी पर चले गए। वहां उन्होंने संथारा (आमरण उपवास) का संकल्प लिया। एक माह का उपवास और 100 वर्ष की आयु पूर्ण हो जाने के बाद, श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि को विशाखा नक्षत्र में भगवान पार्श्वनाथ को मोक्ष की प्राप्ति हुई। भगवान पार्श्वनाथ के उपदेशों ने जैन धर्म पर अमिट छाप छोड़ी है। जैन भक्त भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिदिन पूजा–अर्चना कर अपने जीवन को धन्य मानते हैं।

जैन आचार्य श्री जिनपीयूषसागर सूरिश्वरजी एम.एस., भगवान पार्श्वनाथ को असाधारण प्रभावशाली तीर्थंकर मानते हैं। भगवान पार्श्वनाथ का निर्वाण, भगवान महावीर के निर्वाण (जोकि दिवाली का दिन था) से भी 250 वर्ष पूर्व हुआ था। चूंकि यह वर्ष, भगवान महावीर के निर्वाण का 2550वां वर्ष है, अतः यह, भगवान पार्श्वनाथ के निर्वाण का 2800वां वर्ष है।

भगवान पार्श्वनाथ के निर्वाण के 2800 वर्ष पूरे होने के अवसर पर, सत्य, अहिंसा और करुणा के सिद्धांतों पर बल देते उनके उपदेशों और विरासत के महत्व को रेखांकित करते हुए देशभर में विभिन्न गतिविधियां और स्मारक स्वरूप के आयोजन किए जाएंगे।

डाक विभाग, मानव कल्याण एवं आध्यात्मिकता के क्षेत्र में भगवान पार्श्वनाथ के चिरस्थायी योगदान को ध्यान में रखते हुए उनके 2800वें निर्वाण कल्याणक के अवसर पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए गर्व का अनुभव करता है।

आभार :

डाक–टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरुपण कैशे : सुश्री हिमानी

पाठ : प्रस्तावक द्वारा प्रदान की गई सामग्री से संदर्भित

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 500 पैसे
Denomination	: 500 p
मुद्रितडाक–टिकटें	: 303500
Stamps Printed	: 303500
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

©डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

©Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00